कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here



बड़े पैमाने पर उत्पादन और उपभोग

- हमने देखा कि प्रथम विश्व युद्ध ने पूरी दुनिया में तबाही मचा दी थी तथा पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था गड़बड़ा गई थी।
- लेकिन युद्ध से अमेरिका की अर्थव्यवस्था को फायदा पहुंचा था।
- युद्ध के बाद कुछ समय के लिए तो अमेरिकी–अर्थव्यवस्था को भी झटका लगा था लेकिन 1920 के दशक के शुरूआती सालों से ही अमेरिकी अर्थव्यवस्था तेजी से तरक्की के रास्ते पर बढ़ने लगी।
- 1920 के दशक की अमेरिकी अर्थव्यवस्था की एक बड़ी खासियत थी वृहद उत्पादन का चलन।
- हालांकि वृहद उत्पादन का यह चलन 19वीं सदी के आखिर से ही शुरू हो चुका था लेकिन 1920 के दशक में तो यह अमेरिकी औद्योगिक उत्पादन की विशेषता ही बन गया था।

हेनरी फोर्ड

- कार निर्माता हेनरी–फोर्ड वृहद उत्पादन के विख्यात प्रणेता थे।
- उन्होंने शिकागो के एक बूचड़खाने की असेंबली–लाइन की तर्ज पर डेट्रॉयट के अपने कार कारखाने में भी आधुनिक असेंबली लाइन स्थापित की थी।
- शिकागो के एक बूचड़खाने में मरे हुए जानवरों को एक कन्वेयर–बेल्ट पर रख दिया जाता था और उसके दूसरे छोर पर खड़े माँस विक्रेता अपने हिस्से का मांस उठाकर निकलते जाते थे।
- यह देखकर फोर्ड को लगा कि गाड़ियों के उत्पादन के लिए भी असेंबली लाइन का तरीका समय और पैसे दोनों के लिहाज से किफायती साबित हो सकता है।
- असेंबली–लाइन पर मजदूरों को एक ही काम जैसे कार के किसी खास पुर्जे को ही लगाते रहना – मशीनी ढंग से बार–बार करते रहना होता था।
- काम की रफ्तार इस बात से तय होती थी कि कन्वेयर–बेल्ट किस रफ्तार से चलती है।
- यह काम की गति बढ़ाकर प्रत्येक मजदूर की उत्पादकता बढ़ाने वाला तरीका था।
- कन्वेयर–बेल्ट के साथ खड़े होने के बाद मजदूर अपने काम में ढील करने या कुछ पल के लिए भी अवकाश लेने का जोखिम नहीं उठा सकता था।
- यहाँ तक कि इस व्यवस्था में मजदूर अपने साथियों के साथ बातचीत भी नहीं कर सकते थे।
- इसका नतीजा यह हुआ कि हेनरी फोर्ड के कारखाने की असेंबली लाइन से हर 3 मिनिट में एक कार

Download Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

तैयार होकर निकलने लगी।

- इससे पहले की पद्धतियों के मुकाबले यह रफ्तार कई गुना ज्यादा थी।
- टी-मॉडल नामक कार वृहत उत्पादन पद्धति से बनी पहली कार थी।



फैक्ट्री के बाहर कतार में खड़ी टी-मॉडल गाड़ियाँ

- शुरूआत में फोर्ड-फैक्ट्री के मजदूरों को असेंबली लाइन पर पैदा होने वाली थकान से काफी मुश्किल महसूस हुई क्योंकि वे उसकी रफ्तार को नियंत्रित नहीं कर सकते थे।
- बहुत सारे मजदूरों ने काम छोड़ दिया।
- फोर्ड ने हताश होकर जनवरी 1914 से वेतन दोगुना यानि 5 डॉलर प्रतिदिन कर दिया।
- साथ ही फोर्ड ने अपने कारखानों में ट्रेड-यूनियन गतिविधियों पर भी पाबंदी लगा दी।
- तनख्वाह बढ़ाने से हेनरी-फोर्ड के मुनाफे में आई कमी की भरपाई करने के लिए वे अपनी असेंबली लाइन की रफ्तार बार-बार बढ़ाने लगे।
- इससे मजदूरों पर काम का बोझ लगातार बढ़ता रहता था।
- अपने इस फैसले से फोर्ड बहुत संतुष्ट थे।
- कुछ समय बाद उन्होंने कहा था कि 'लागत कम करने के लिए' उन्होंने इससे अच्छा फैसला जिंदगी में कभी नहीं लिया।
- फोर्ड द्वारा अपनाई गई उत्पादन पद्धतियों को जल्दी ही पूरे अमेरिका में अपनाया जाने लगा।
- 20 के दशक में ही यूरोप में भी उनकी नकल की जाने लगी।
- वृहत उत्पादन पद्धति ने इंजीनियरिंग आधारित चीजों की लागत और कीमत में कमी ला दी।
- बेहतर वेतन के चलते अब बहुत सारे मजदूर भी कार जैसी टिकाऊ वस्तुऐं खरीद सकते थे।
- 1919 में अमेरिका में 20 लाख कारों का उत्पादन होता था जो 1929 में बढ़कर 50 लाख कार प्रतिवर्ष से भी ऊपर जा पहुंचा।
- बहुत सारे लोग फ्रिज, वॉशिंग मशीन, रेडियो, ग्रामोफोन प्लेयर्स आदि भी खरीदने लगे।
- ये सब चीजें 'हायर-परचेज' व्यवस्था के तहत खरीदी जाती थीं। यानी लोग ये सारी चीजें कर्ज़ पर खरीदते थे और उनकी कीमत साप्ताहिक या मासिक किस्तों में चुकाई जाती थी।
- मकानों के निर्माण और निजी मकानों की संख्या में वृद्धि से भी फ्रिज, वॉशिंग मशीन आदि उपकरणों की माँग में इज़ाफा हुआ।
- घरों का निर्माण या खरीदारी भी कर्ज़ पर ही की जा रही थी।
- 1920 के दशक में आवास एवं निर्माण में आए इस उछाल से अमेरिकी संपन्नता बढ़ी।
- मकानों के निर्माण और घरेलू ज़रूरत की चीज़ों के खरीदने से रोज़गार और माँग दोनों बढ़ी।
- उपभोग बढ़ रहा था तो ज़्यादा निवेश की जरूरत हो गई जिससे और नए रोज़गार व आमदनी दोनों

Download Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

में वृद्धि होने लगी।

- 1923 में अमेरिका शेष विश्व को पूँजी का निर्यात दोबारा करने लगा और वह दुनिया में सबसे बड़ा कर्ज़दाता देश बन गया।
- अमेरिका द्वारा आयात और पूँजी निर्यात ने यूरोपीय अर्थव्यवस्थाओं को भी संकट से उबरने में मदद दी।
- अगले 6 साल में विश्व व्यापार व आय वृद्धि दर में काफी सुधार आया।
- लेकिन यह स्थिति लंबे समय तक कायम नहीं रह पाई।
- 1929 तक आते-आते दुनिया एक ऐसे आर्थिक संकट में फंस गई जिसका दुनिया ने पहले कभी अनुभव नहीं किया था।

महामंदी

- आर्थिक महामंदी की शुरुआत 1929 से हुई और यह संकट 1930 के दशक के मध्य तक बना रहा।
- इस दौरान दुनिया के ज़्यादातर हिस्सों के उत्पादन, रोज़गार, आय और व्यापार में भयानक गिरावट दर्ज की गई।
- इस मंदी का समय और असर सब देशों में एक जैसा नहीं था।
- लेकिन ऐसा माना जा सकता है कि कृषि क्षेत्रों और समुदायों पर इसका सबसे बुरा असर पड़ा।
- इसका कारण यह था कि औद्योगिक उत्पादों की तुलना में कृषि उत्पादों की कीमतों में ज़्यादा भारी और ज़्यादा समय तक कमी बनी रही।

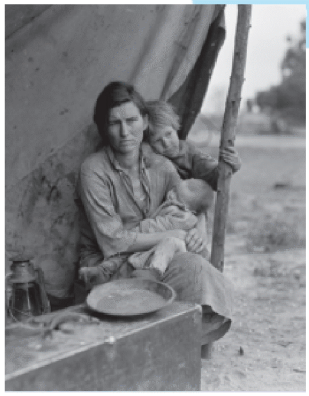

महामंदी के दौरान एक आप्रवासी खेत मज़दूर का बेघर और भूखा परिवार, 1936
सौजन्य : लायब्रेरी ऑफ़ कांग्रेस प्रिंट्स एंड फोटोग्राफ्स डिविजन

यह चित्र लेने वाली डॉरोथी लेंग ने इस भूखी माँ के साथ अपनी मुलाकात के क्षणों को याद करते हुए बहुत साल बाद कहा था –

'मैंने इस भूखी, लाचार औरत को देखा और मानो किसी चुंबक से खिंची मैं उसकी ओर बढ़ती चली गई...।

- मैंने न तो उसका नाम पूछा न उसके अतीत के बारे में सवाल किए।
- उसने मुझे अपनी उम्र बताई। उसने कहा कि उसकी उम्र 35 साल है।
- उसने कहा कि वे लोग (यानी माँ और उसके 7 बच्चे) आसपास के खेतों में जाड़ों से जमी पड़ी सब्ज़ियों और उन परिंदों के सहारे जिंदा हैं जिन्हें उसके बच्चे मार लाते हैं...।
- वो वहाँ बैठी थी...

अपने बच्चों को चिपटाए, शायद उसे लगता था कि मेरी तसवीर उसकी कोई मदद कर सकती है इसलिए उसने मेरी मदद कर दी..

महामंदी के कारण :-

- हम पहले ही देख चुके हैं कि प्रथम विश्व युद्ध के बाद विश्व-अर्थव्यवस्था कितनी कमज़ोर हो गई

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

थी। अत: इस महामंदी के कई कारण थे-

1. कृषि क्षेत्र में अति उत्पादन
2. अमेरिका द्वारा कर्ज वसूली

1. कृषि क्षेत्र में अति उत्पादन :-

- कृषि उत्पादों के अधिक उत्पादन से उनकी कीमतें गिरने लगी जिसके कारण स्थिति खराब हो गई थी।
- कीमतें गिरीं और किसानों की आय घटने लगी तो आमदनी बढ़ाने के लिए किसान उत्पादन बढ़ाने का प्रयास करने लगे जिससे ज़्यादा माल से ही वे अपना आय स्तर बनाए रख सकें।
- इससे बाज़ार में कृषि उत्पादों की आमद और भी बढ़ गई और फिर कीमतें और नीचे चली गई।
- खरीदारों के अभाव में कृषि उपज पड़ी-पड़ी सड़ने लगी।

2. अमेरिका द्वारा कर्ज वसूली :-

- 1920 के दशक के मध्य में बहुत सारे देशों ने अमेरिका से कर्ज़े लेकर अपनी ज़रूरतों को पूरा किया था।
- जब हालात अच्छे थे तो अमेरिका कर्ज़ा देता रहा लेकिन संकट का संकेत मिलते ही अमेरिकी उद्यमियों के होश उड़ गए।
- उन्होंने कर्जे देना बन्द कर दिया तथा कर्ज वसूली करना प्रारम्भ कर दिया।
- 1928 के प्रथम छमाही तक विदेशों में अमेरिका का क़र्ज़ा 1 अरब डॉलर था। जो साल के अंत होते-होते घटकर केवल चौथाई रह गया था।
- जो देश अमेरिकी कर्ज़े पर सबसे ज़्यादा निर्भर थे उनके सामने गहरा संकट आ खड़ा हुआ।

मंदी का प्रभाव :-

- मंदी का भले ही सब देशों में एक जैसा प्रभाव न पड़ा हो लेकिन अमेरिकी पूँजी के लौट जाने से पूरी दुनिया पर असर ज़रूर पड़ा।
- यूरोप में कई बड़े बैंक धराशायी हो गए।
- कई देशों की मुद्रा की कीमत बुरी तरह गिर गई।
- इस झटके से ब्रिटिश पाउंड भी नहीं बच पाया।
- लैटिन अमेरिका और अन्य स्थानों पर कृषि एवं कच्चे मालों की कीमतें तेज़ी से लुढ़कने लगीं।
- अमेरिकी सरकार इस महामंदी से अपनी अर्थव्यवस्था को बचाने के लिए आयतित पदार्थों पर दो गुना सीमा-शुल्क वसूल करने लगी। इस फैसले ने विश्व व्यापार की कमर ही तोड़ दी।

अमेरिका और महामंदी :-

- औद्योगिक देशों में भी मंदी का सबसे बुरा असर अमेरिका को ही झेलना पड़ा।
- कीमतों में कमी और मंदी की आशंका को देखते हुए अमेरिकी बैंकों ने घरेलू क़र्ज़े देना बंद कर दिया।
- जो कर्ज़े दिए जा चुके थे उनकी वसूली तेज़ कर दी गई।
- किसान उपज नहीं बेच पा रहे थे, परिवार तबाह हो गए, कारोबार ठप पड़ गए।
- आमदनी में गिरावट आने पर अमेरिका के बहुत सारे परिवार कर्ज़े चुकाने में नाकामयाब हो गए जिसके चलते उनके मकान, कार और सारी ज़रूरी चीजें कुर्क कर ली गईं।

Download Mission Gyan App

भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

- 1920 के दशक में जो संपन्नता दिखाई दे रही थी वह धूल के गुबार की तरह रातोंरात काफूर हो गई थी।
- बेरोज़गारी बढ़ी तो लोग काम की तलाश में दूर-दूर तक जाने लगे।
- आखिरकार अमेरिकी बैंकिंग व्यवस्था भी धाराशायी हो गई।

(i) निवेश से अपेक्षित लाभ न मिलने
(ii) कर्ज़े वसूल न कर पाने तथा
(iii) जमाकर्ताओं की जमा पूँजी न लौटा पाने के कारण हज़ारों बैंक दिवालिया हो गए और बंद कर दिए गए।

- इस परिघटना से जुड़े आँकड़े सकते में डाल देने वाले हैं :

1933 तक 4,000 से ज़्यादा बैंक बंद हो चुके थे तथा 1929 से 1932 के बीच तकरीबन 1,10,000 कंपनियाँ चौपट हो चुकी थीं।



बेरोज़गारी लाभ के लिए क़तार में खड़े लोग, अमेरिका, डॉरोथी लेंग द्वारा लिया गया चित्र, 1938

- जब एक बेरोजगारी जनगणना से पता चला कि देश में एक करोड़ से ज़्यादा लोगों के पास कोई काम नहीं है तो अमेरिका के बहुत सारे राज्यों में स्थानीय प्रशासन की ओर से बेरोज़गारों को छोटे-छोटे भत्ते दिए जाने लगे।
- ये लंबी कतार ं महामंदी के सालों में गरीबी और बेरोज़गारी का प्रतीक थी।
- यद्यपि 1935 तक ज़्यादातर औद्योगिक देशों में आर्थिक संकट से उबरने के संकेत दिखाई देने लगे थे लेकिन लोगों तथा समाजों, के दिलों दिमाग पर उसकी जो छाप पड़ी थी वह जल्दी से मिटने वाली नहीं थी।

Download Mission Gyan App
भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here